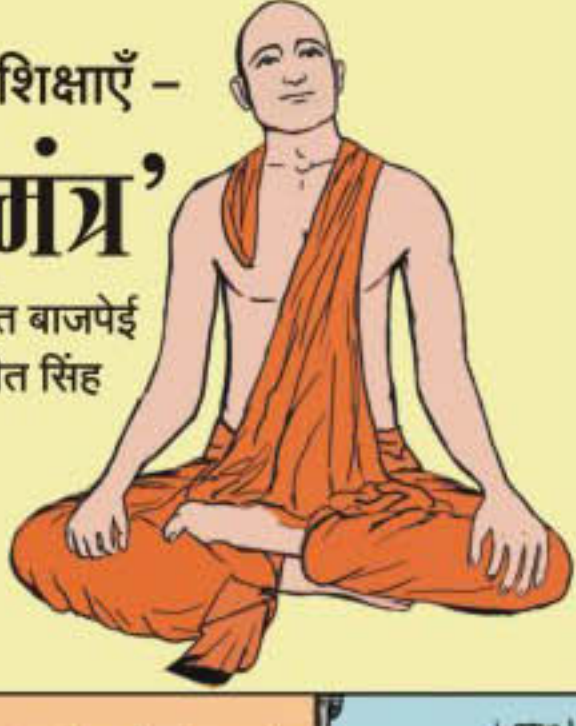


## स्वामी रामतीर्थ की शिक्षाएँ – 'आनंद मंत्र'

संपादक निर्देशन : प्रशांत बाजपेई  
चित्र सज्जा : दमनजीत सिंह



स्वामी रामतीर्थ (१८७३-१९०६) ने स्वामी विवेकानंद की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए भारत और भारत के बाहर हिन्दू दर्शन का प्रसार किया। स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा पर जोर दिया और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध जागरण किया। इनकी वेदांत की शिक्षाओं ने सारी दुनिया के प्रबुद्ध लोगों को आकर्षित किया।

सन् १९०२ में स्वामी रामतीर्थ अमेरिका गए। वहाँ के अनेक गणमान्य और सामान्यजन उनके शिष्य हुए। लोग निरंतर उनसे मिलने आते रहते थे। अमेरिका प्रवास के समय स्वामी जी ने वहाँ के समाज में व्याप्त गौरे काले के भेद पर प्रहार किया और अमेरिकी समाज को सामाजिक समरसता की शिक्षा दी। उनके जन्मदिवस अक्टूबर और निर्वाण दिवस दीपावली के प्रसंग पर प्रस्तुत है एक सु-घटना इली पर आधारित प्रसंग यहाँ प्रस्तुत है।



स्वामी जी की सैनफ्रांसिस्को की यात्रा में भी सदा की तरह लोग उनसे मिलने आ रहे थे। एक दिन वे आए हुए लोगों से चर्चा कर रहे थे। तभी संप्रांत महिला उनके पास आई।



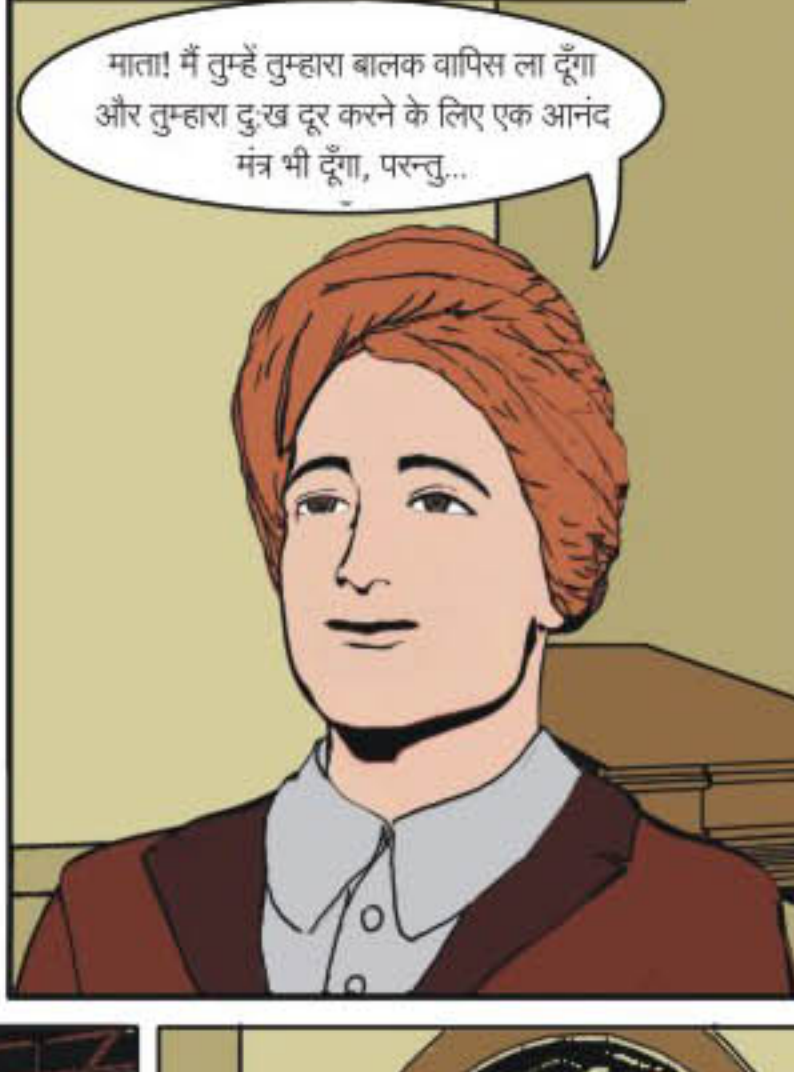
देवपुत्र

स्वामी जी ने जब उसके आने का कारण जानना चाह तो उसके आँसू बह पड़े। आँसूओं को रोकने का प्रयास करते हुए वह बोली।



स्वामी जी ! लोग कहते हैं, आप चमत्कारी संत हैं। मेरा बच्चा जानलेवा बुखार से ग्रस्त होकर चल बसा। मेरा बच्चा मुझे वापस दिला दीजिए।

स्वामी जी शांत भाव से महिला की बात सुनते रहे। फिर बोले-



माता! मैं तुम्हें तुम्हारा बालक वापिस ला दूँगा और तुम्हारा दुःख दूर करने के लिए एक आनंद मंत्र भी दूँगा, परन्तु...

...तुम्हें उसके लिए एक कीमत चुकानी होगी। बोलो! चुका सकोगी वह कीमत?



देवपुत्र

स्वामी जी ! धन दौलत की मेरे पास कमी नहीं। जो चाहेंगे दूँगी, बस मुझे मेरा बच्चा वापिस दिला दीजिए।



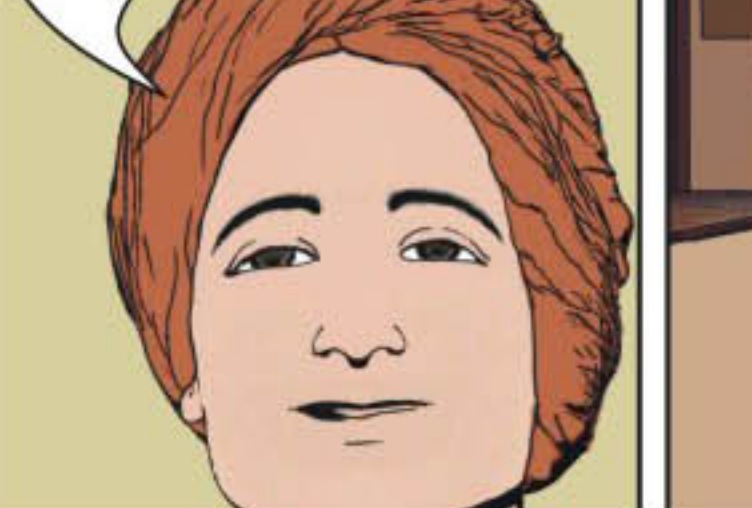
राम के परमानंद साम्राज्य में इस दौलत की कीमत नहीं है माँ। तुम्हें इससे भी बड़ी कीमत चुकानी होगी।



मैं तैयार हूँ स्वामी जी। अपने बच्चे को सीने से लगाने के आनंद के आगे हर कीमत कम है।



राम के साम्राज्य में आनंद का अभाव नहीं है माता। आओ मेरे साथ।



स्वामी जी उस महिला के साथ चल पड़े।



एक स्थान पर पहुँचकर स्वामी जी ने गाड़ी रुकवा दी।



देवपुत्र

आओ माँ! तुम्हारा बालक तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।

कुछ दूर पैदल चलकर वे एक दुकान के सामने रुके। स्वामी जी के पुकारने पर दुकान पर काम कर रहा एक छोटा सा बालक आया। यह एक काला अनाथ बालक था।



देवपुत्र

यह रहा तुम्हारा बच्चा माता!

इस माता-पिता विहीन बालक का पोषण अपने बालक की तरह कर। अपने हृदय का विस्तार कर। मेरा विश्वास कर माँ! यही तेरे दुःख की दवा है। ईश्वर ने इन्हीं तेरे पुत्र के रूप में भेजा है। इसे सीने से लगा ले। यही है 'आनंद मंत्र'।



श्वेत माता ने अश्वेत पुत्र को सीने से लगा लिया। उसके हृदय में उमड़ता वालसर्व आँखों के रास्ते बह निकला।



देवपुत्र

स्वामी जी के चेहरे पर दिव्य तेज चमक रहा था और उनकी आँखों में सारी मानवता का समेटने वाली करुणा झलक रही थी। भारत के आध्यात्म के प्रकाश के काले-गौरे का भेद मिटा दिया।

